B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA

(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)

HISTORY HONS.

BA DEGREE-1

PAPER-1

UNIT-4

Department of History

Pankaj kr.Mishra

Date-03/07/2020

TOPIC- एक शक्ति के रूप में गुप्तों के उद्भव के कारक

PART-B

Scanned with CamScanner

एक शक्ति के रूप में गुप्तों के उद्भव के कारक

- **गुप्त कुषाणों के सामंत थे :** कुषाणों के सामंत रहने के कारण गुप्तों पर उनके राजनीतिक, सैनिक व्यवस्था का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। कुषाणों की शक्ति घुड़सवार सेना में निहित थी जिसे गुप्तों ने ग्रहण कर लिया। साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि गुप्त सेना में हाथियों व रथों का महत्त्व कम हो गया तथा घुड़सवार सेना का महत्त्व बढ़ गया।

- **सशक्त आर्थिक आधार :** गुप्तों के पास भौगोलिक आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता थी। प्रचुर मात्रा में खनिज संसाधन उपलब्ध थे, पर्याप्त उपजाऊ भूमि के कारण अधिशेष कृषि की स्थिति भी साथ ही जनसंख्या की बहुलता श्रमपूर्ति में सहायक थी।

- **प्रारंभिक शासकों की भूमिका :-** प्रारंभिक शासकों जैसे चंद्रगुप्त, समुद्रगुप्त तथा चंद्रगुप्त द्वितीय ने त्रिसूत्री नीति के द्वारा गुप्त साम्राज्य को उत्कर्ष प्रदान किया। ये नीतियाँ थी—

1. **युद्ध एवं विजय की नीति :-** चंद्रगुप्त प्रथम ने बिहार और उत्तरप्रदेश के अधिकतर भागों पर अधिकार कर गुप्त राज्य की सीमा का विस्तार किया। आगे समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त और दक्षिणावर्त की विजय की जिसका उल्लेख प्रयाग प्रशस्ति में है। चंद्रगुप्त द्वितीय ने शक शासक रुद्रसिंह तृतीय को पराजित कर पश्चिम में गुप्त साम्राज्य का प्रसार किया। महरौली अभिलेख से विदित होता है कि उसने पश्चिम बाल्हिक एवं पूर्व में बंगाल तक अपनी सीमा का विस्तार किया।

2. **कूटनीतिक संबंधों की नीति—** गुप्त शासकों ने अपने कूटनीतिक कौशल का भी परिचय दिया। समुद्रगुप्त ने दक्षिण के राजाओं के साथ ग्रहणमोक्षानुग्रह की नीति तथा आटविक राज्यों के प्रति परिचारीकृत नीति और विदेशी शासकों के साथ आत्मनिवेदन की नीति अपनाकर महान कूटनीतिक क्षमता का परिचय दिया और गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया।

③ वैवाहिक संबंधों की नीति – गुप्त शासकों ने वैवाहिक संबंधों के माध्यम से अपने साम्राज्य को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। चंद्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह कर लिच्छवी वंश का सहयोग व समर्थन प्राप्त किया। इस वैवाहिक संबंध की पुष्टि कुमारदेवी प्रकार के सिक्कों से होती है। समुद्रगुप्त ने स्वयं को लिच्छवी दौहित्र कहा है अर्थात् लिच्छवियों के पुत्री का पुत्र। इस संज्ञा को वह गर्व के साथ स्वीकार करता है जिससे पता चलता है कि लिच्छवियों के साथ संबंध होने से गुप्तों की स्थिति मजबूत हुई।

चंद्रगुप्त द्वितीय के समय वैवाहिक संबंधों की नीति गुप्त साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण में अत्यंत प्रभावी भूमिका निभाती है। उसने वैवाहिक संबंधों की एक शृंखला बनाकर अनेक राजाओं तथा राजवंशों को अपना मित्र बना लिया। वाकाटकों के सहयोग से शकों को पराजित कर गुप्त साम्राज्य की सीमा चंद्रगुप्त द्वितीय ने सौराष्ट्र तक बढ़ा दी। इस शक विजय के उपलक्ष्य में चांदी के सिक्के जारी किए। इस प्रकार इन वैवाहिक संबंधों का अपना राजनैतिक महत्व था। इनके माध्यम से गुप्तों ने अपने साम्राज्य का विस्तार तो किया साथ ही उसकी सुरक्षा भी सुनिश्चित कर ली।

xxxxx xxxxx

Scanned with CamScanner